ओ३म्

युक्ति प्रभाकर

प्रथम भाग

श्री मत्परम हंस परि ब्राज का चार्य्य आत्म वित्
कृत कृत्य श्री स्वामी निर्भयानन्द शर्म्मा
पूज्य पाद शिष्येण सेक्रेटेरी पतित पावनी
सभा विश्वा मित्र पुरी श्री पंडित मक्खन
लाल उप नाम मग्ना नन्द शर्म्मणा
विराचितः

श्री गुरु मुख से श्रवण की हुई युक्तियों को

लाइटनिङ्ग प्रेस शहर मेरठ में मुद्रित कराया

प्रथमा वृत्ति में १००० पुस्तकें | सम्वत् १९५५ सन् १८९८ ई० | मूल्य ≶)॥ डाकव्यय ।)॥

श्री गुरुभ्यो नमः श्री गणेशाय नमः

ओ३म्

भूमिका

आज कल बहुधा ऐसा देखा गया है कि परम आनन्द की प्राप्ति के वास्ते शैव शाक्तिक गाणपत्ति सौर्य्य वैष्णव और इनके सिवाय उदासी ग़रीब दासी निर्मले बैरागी अपनी २ बुद्धिके अनुसार अपने २ मत पंथ की तर्फ़ खैंच तान करके अक़लिया तुक्के लड़ाते और निर्णय करने के समय मुख्य बिषयको छोड़ जय पराजय की दृष्टि से धर्म्म सभा कमेटी समाजों के अखाड़े में कूद के पहलवानों की तरह जिस्तरह संभवहो एक दूसरेके पछाड़ने का ख्याल रखता है इसका फल परमानन्द के बदले परम क्लेश की प्राप्ति देखी गई है शास्त्रार्थ की जगह शस्त्रार्थ होजाता है और बहस मुबाहिसे की हाय तोबा में इस अनित्य संसार में शरीर की क्षण भंगुरता की दृष्टि लुप्त होजाती है और जब दृष्टि लुप्त हुई तो बिना लाठी के अन्धे की तरह भ्रम रूपी महा गर्त के आवर्त में कुढंगे तौर पर पड़के इस दुर्लभ नर तनुका जो फल या परम पुरुषार्थ मोक्ष है उससे बिमुख रह जाते हैं केवल संसार में अपनी प्रतिष्ठा गौरवता और मान प्रकट करने के लिये कोई व्याकरण की टांग तोड़ता है कोई न्याय में बकर२ अन्याय करता है कोई भोग में खचित हुआ २ योग की बातें बघारता है कोई मीमांसा पातंजल के असल प्रयोजन से दृष्टि उठाकर शब्द जाल के जंजाल में अपने प्रतिपक्षी को घसीटता है शास्त्रार्थ के अन्त में अपने २ जथे का पक्षपात करने में झूंठ मूठ का निष्पक्ष पाती

बनकर महा अनर्थ करते हमको तो नज़र आए हैं इसलिये अविद्या के नशे में चूर अपने पूर्वोक्त प्यारे भाइयों को केवल सावधान करने की दृष्टि से हमारे अन्तर्य्यामी परमात्मा ने हमारे चित्त को प्रेरणा की है झगड़े में डालने वाले शास्त्रीय वितंडावाद रूपी कलंक को छोड़ कर निष्कलंक चित्त से बहुत सरल व सीधी तरह सर्व साधारण या मनुष्योंके आम फ़हम बाज़ारू संभाषणमें जिस्से अधिकारी को परम आनन्द प्राप्त हो और अनधिकारी अधिकारी बन जावे ऐसी युक्तियों से व्याख्यान के तौर पर उपदेश कर, यद्यपि मेरी इस व्यक्ति को इस क़दर लंबी चौड़ी शास्त्रीय विद्या नहीं है परन्तु श्री१०८स्वामी निर्भयानन्द शर्म्माके मुख द्वारा महावाक्य श्रवण किये और उनकी दया दृष्टि से वे चित्त में स्थिर होगये और कितने ही काल तक ज्येष्ठ गुरु पुत्र श्री पं० काली चरण शर्म्मा और मेरा एकत्र वास रहा उनके मुखसे वेदान्त की अनेक युक्तियां वार २ श्रवण करने में आई और बिचार सागर आदि वेदान्त ग्रंथ भी उनसे विचारे जिनकी संभाषण के समय कथन शक्ति की ऐसी दृढ़ता है कि मानों मल्ल क्रीड़ा के अखाड़े में अंगद के गाढ़े हुए पैर को कोई चलित नहीं कर सक्ता और सद्गुरु कृपा कटाक्ष जो शामिल हाल है उस प्रेरणा में इस प्रकार का विलक्षण प्रकाश उत्पन्न हुआ है कि सद्विद्याके उपदेश करने में उत्तम जिज्ञासुओं को अपने निशाने की तर्फ़ दृष्टि कराने में हमको किंचित भी भय नहीं है मोटी युक्ती है कि सत्य बात कहने में एक हलग्राही जो अक्षर का नाम भी न जानता हो षट् शास्त्री को निश्शंक होकर जवाब देदेता है इसी प्रकार हमारा चित्तभी कल्याण कारक वाक्यों के श्रवण करानेमें

किसी से भी भयको प्राप्त नहीं होता इसलिये हमने कुछ युक्तियां जो कल्याण में उपयोगी हैं संग्रह करके उत्तम जिज्ञासुओं के वास्ते मुद्रित कराई हैं अवलोकन करने वाले अपने२ प्रिय भ्रातृ वर्ग की सेवा में सविनय प्रार्थना है कि सार ग्राही दृष्टि से कुतर्क जालको शुद्ध बुद्धि के वज्र पातसे धूल करके सूक्ष्म दृष्टिसे अपने परमानन्द को प्राप्त होकर दया दृष्टिसे हमको भी याद करते रहैं मुक़ाम हाथरस बौहरे ज्योती प्रसाद साहब रईस के बाग़ में ता० २० फ़०सं०८९ ई० को श्री स्वामी निर्भयानंदजी की चरण सेवा में श्री पं० द्वा० ना० व पं० पन्ना लाल मंत्र शास्त्री व पं० श्याम लाल व पं० वि० ला० और मुन्शी मोहन लाल और भी बहुत सत्संगी भाई थे मुझ मगनानंद ने यही युक्तियां जो मुद्रित हुईं सुनाईं और प्रार्थना की कि यदि आज्ञाहो तो छपवादी जावे इस पर एक दो भाइयों की यह राय हुई कि यह छपवाने से जो वाचक ज्ञानी व वादी हैं उनको सतसंगी लोगों के दिक़ करने का मौक़ा अच्छा मिलेगा परन्तु श्री स्वामी जी महाराज ने सत्संगी भाइयों पर परम दया करके आज्ञा दी कि अवश्य छपवादो सत्संगियों को तो लाभ होगा और जो बाक़ी हैं यदि न्याय दृष्टि से देखें और विचारेंगे तो वे भी लाभ उठावेंगे इस कारण फिर सविनय प्रार्थना है कि अभिमान के बानको बुद्धि रूपी कमान से न छोड़ के सतसंग रूपी मृगको न वेधन करें जिससे परम आनंद की प्राप्ति को पावें ऐसे ही कारणों से प्रथम थोड़ी सी युक्ति छपवाई हैं दूसरे भाग में अति उत्तम युक्तियां जो श्री गुरु महाराज से श्रवण हुई हैं मुद्रित कराई जावेंगी।

ओ३म्

॥*॥ मंगला चरण ॥*॥

हे दृश्या दृश्य चराचर जगत् के अभिन्न निमित्तोपादान कारण निर्विकार निराकार स्वयं प्रकाश नित्य मुक्त सर्वाधिष्ठान *निषेधावधि भूत सच्चिदानंद सर्वव्यापक मेरे परमात्मा तेरे वास्तव स्वरूप के निर्णय करने में शेष सारदा भी चकित हैं नारदादिक महर्षि भी थकित हैं वेद भी नेति २ कहि गाते हैं फिर बड़े २ आलिम फ़ाज़िल तेरी तहक़ीक़ात में सकुचाते हैं इसमें क्या आश्चर्य है- हे मेरे अंतर्यामी ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ सर्वात्मन् मैं वार २ तेरे दर्बार में प्रणाम कर प्रार्थना करता हूं कि आत्म जिज्ञासु सत्संगी गुरु भक्तों के विचार की द्रढ़ता के वास्ते निज गुरु मुख से श्रवण करी हुई विचार में उपयोगी युक्तियों को संग्रह करके मुद्रित करा कर प्रकाश कराने का उद्योग करता हूं सो सर्व विघ्नौं को निवृत्त करके मेरे इस परोपकारक उद्योग को (सुफल कर) ३ तथास्तु- (जय हो) ३ हरिः ओ३म् ॥

हस्ताक्षर मक्खनलाल शर्म्मा

उप नाम मग्नानन्द

* यह भी नहीं यह भी नहीं कहते २ जो आख़ीर में रह जावे वह निषेधावधि भूत है

ओं तत्सत्

बहुधा पुरुषों को यह ख़्याल है कि अभी थोड़ी अवस्था है भगवत भजन व ब्रह्म विचार वृद्धावस्था में करेंगे अभी तो व्यवहारों से फ़ुर्सत नहीं मिलती यह उनका ख़ास ख़्याल है क्योंकि व्यवहार तो जब तक शरीर है चले ही जावेंगे पूरे नहोंगे व्यवहार पूरे हुए और शरीर समाप्त हुआ मसल मशहूर है (कार दुनिया कसे तमाम न कर्द) (और इसमें पीछे एक दृष्टान्त है)

१ युक्ति अर्थात् दृष्टान्त

एक प्यासी बकरी व्याकुल होकर एक पहाड़ के झिरने पर पानी पीने को गई- (जहां ऊपर से जल गिरता है वहां जो शब्द होता है उसका नाम शास्त्र कारों ने चुल २ रक्खा है) जब पानी पीने को क़दम बढ़ाया उस चुल २ शब्द से डर कर पानी न पीआ हट आई यथार्थ में प्यासी थी फिर गई फिर उसी शब्द के भय से हट आई ग़रज कैई बार गई और लौट आई तब एक दूसरा पशु आया जो नित्य वहां पानी पीआ करता था उसने प्रथम अच्छी तरह जल पान किया फिर बकरी से पूछा तू पानी क्यों नहीं पीती बकरी ने वही जो असली सबब था बता दिया कि यह चुल २ बंद होवै तो पानी पीऊं जब तक यह चुल २ है तब तक पानी नहीं पी सक्ती वह जानवर बोला अरी बावली यह चुल २ तो चली ही जावैगी पानी पीना है तो पीले चुल २ के बंद होते ही पानी भी बंद हो जायगा-

दृष्टान्त

इस संसार के विषय चुल २ वत् हैं और पानी पीना आत्म बिचार करना है अर्थात् अपने स्वरूप का निश्चय करना है कि मैं क्या हूं कौन हूं शरीर जो साढ़े तीन हाथ का पुतला बिष्टा, मूत्र, मांस रक्त, अस्थि, मज्जादि, का थैला है. वह हूं या कुछ और हूं सो यह बिचार गृहस्थ में तौ इन्ही संसारी व्यवहारों में रहकर होता है अर्थात् जब तक शरीर है तब तक व्यवहार है जब तक व्यवहार हैं तब तक फ़ुर्सत नहीं तौ जन्म पर्य्यन्त फ़ुर्सत नहीं फिर बिचार किस समय होगा इस जन्म के बाद कर्मों करके दूसरा शरीर मिल जायगा उसमें भी यही अदमफ़ुर्सती रहैगी शायद दूसरा जन्म मनुष्य योनि का न मिला तौ वह भी गया ग़रज़ बिन आत्म चिंतन ८४ लाख योनिके चक्र में भ्रमण करना पड़ता है और गुरु वेद महात्मा लोग पुकार पुकार कहते हैं फिर भी यह प्राणी विषयों में फंसा अविद्या (अज्ञान) के घोर नशे में आत्म बिचार से ख़ाली रह जाता है। अब उन पुरुषों को सोचना चाहिये कि जो यह कहते हैं कि हम विषयों में फंसे हुए हैं इस बंधन से छूटें तब कुछ कर सकें सो यह कहना उनका ठीक नहीं है क्योंकि यथार्थ में कोई रस्सी या ज़ंजीर आदि से नहीं बंधे केवल मन का विकार है जिसने बंधायमान मानकर क्लेश उठा रक्खा है इस विषय में दृष्टान्त है ॥

युक्ति २

एक कुम्हार अपने गधे लादे कहीं जाता था राहमें उसको एक सस्ता गधा और मोल को मिल गया- पहले गधों के नाप

का पेंड़ (जिस एकही रस्सी में बहुत से गधे बांधे जाते हैं) था नये गधे को रस्सी नथी कभी पानी भरने की डोर कभी कपड़ों से बांधने का ख्याल करता रहा इतने में एक साधू बिचरते २ चले आये पूछा तू कुम्हार किस फ़िकर में है उत्तर दिया स्वामी जी एक गधा नया लिया है उसके बांधने को रस्सी नहीं और यहां पास कोई ग्राम नहीं क्या करूं—साधू ने कहा बच्चा हम तेरे गधे को मंत्रों से बांध देते हैं कुम्हार बड़ा प्रसन्न हुआ तब सब गधों की बरावर साधू ने उस गधे को खड़ा कराके उस के पैरों में बांधने कासा इशारा झूंठ मूठ कर दिया गधे नें जाना बन्ध गया रात भर उसीतरह खड़ा रहा प्रभात होते सब गधे छोड़े जिसको खोलता जावै चलता जाय नया गधा तौ वास्तव में बंधा ही नहीं था जिस को खोलता उस को हांका तौ वह न चला जब पीछे से धक्याया तौ भी आगे को क़दम न बढ़ाया पीछे ही को गिरा पड़े क्योंकि वह जानता था कि मैं बन्धा हूं आगे को क़दम दिया और गिरा बहुतेरा उपाय कुम्हार ने किया परन्तु वहगधा न चला फिर उन्ही महात्मा को तलाश किया दैव संयोग से मिल गये उन से प्रार्थना की कि महाराज मेरा गधा आपने जो कल मंत्रो से बांधा था नहीं चलता तब तौ स्वामी जी हँसे और बोले कि अरे मूर्ख वह तौ मंत्रों से बंधा हुआ है विना खोले कैसे चलेगा तव तौ कुम्हारने बहुत बिनती की और महात्मा जी को लेगया स्वामीजीने जातेही गधे के पैरों से हाथ इस तरह लगाया जैसे खोलते हैं खुलने का संकेत पाते ही गर्धव चल दिया अब विचारना चाहिये कि नतौ वास्तव में गधा बांधा गया न खोला जब उसने माना कि बंधा हूं बंध गया जब जाना खुलाहूं चल दिया—

दृष्टान्त

इसी प्रकार जो मूढ़ पुरुष ख्याल करते हैं कि हम संसारी बंधनों में फंसे हैं वे फंसे रहतेहैं जब जाना कि कोई ज़ंजीर बेड़ी आदि से तौ बंधे नहीं केवल मनका कार्य है– इस प्रकार समझ कर मन मर्कट को बश कर अपने रूप को निश्चय करे जिससे परम सुख प्राप्तिहो क्योंकि नाशवान असार संसारमें सुख कदापि नहीं परन्तु बड़े आश्चर्य की वार्ता है किजब सब तरह जानलिया कि मिथ्या है फिर सत्य का भ्रम करना उस सुनार के समान मूर्खता है जिसने सब प्रकार परीक्षा करके सत्य सुवर्ण को मिथ्या या ख़राब जाना जो इस युक्ति में कथन है ॥

युक्ति ३

एक शख्स़ सुनार के पास कुछ सौना बेचने लेगया सुनार ने कहा परीक्षा करलें तब भाव करेंगे प्रथम कसौटी पर तौ उम्दा रंगत की लकीर आई फिर चोट लगाकर देखा तौ असल कुन्दन प्रतीत हुआ पीछे टांकी से काटा तब भी खराही ज्ञात हुआ तिस्के बाद तपाया तौ भी बहुत उत्तम रहा अब सोचना चाहिये कि जब सौने की सब प्रकार विधि पूर्वक परीक्षा करली तौ सुवर्ण के अच्छे हौने में कुछ संदेह नहीं रहा अर्थात् उसकी असली हालत मालूम होगई ॥

इसी प्रकार दृष्टान्त ३

जब श्रुति से (सर्वं खल्विदंब्रह्मनेह नानास्ति किंचिन) अर्थात् सब ब्रह्मही है और किंचित् मात्रभी नही दूसरे प्रत्यक्ष में

और प्रमाण क्या सब देखते चले जाते हैं कि सब का सब दृश्य पदार्थ नाश को प्राप्त होता जाता है स्त्री धन पुत्रादि अपना शरीर यह कुछ नहीं रहता फिर बृथा इन रगड़ों को सत्य मान कर धोखा खाना उस मूर्ख बनिये के तुल्य है जो इस चौथी युक्ति में कहा है ।

युक्ति ४

एक बानिया बंजी को जाया करता था एक रोज़ का ज़िक्र है वह अहोई आठें के दिन बंजी को गया था उसकी स्त्री ने गेरू घोलकर लिखना [जो दीवारों पर काढ़ कर पूजती हैं] काढ़ने को रख दिया स्त्री किसी आवश्यकता में ग्रह से बाहर गई थी सन्ध्या समय जब बनिया बंजी से लौटा उस को पाख़ाने की बड़ी हाजत हुई झट पट गठरी उतार तुरन्त गेरू का लोटा ले पाख़ाने में घुस गया जब आबदस्त लिया तमाम हाथ व गुदा सुर्ख़ होगई लालटेन से देखा तौ हक़ीक़त में सुर्ख़ी तौ थी ही पछाड़ खाकर आंगन में गिर पड़ा और हाय ही हाय चिल्लाने लगा लड़के दौड़ आये और पूछा कि चाचा जी क्या हुआ बोला कुछ नहीं ख़ून कट पड़ा लड़के भी घबराकर लाल रंगत उस की धोती व हाथों की देख हकीम व वैद्य व डाक्टर के पास दौड़े गये दवा लाये परन्तु उस बनिये को चैन न पड़ा क्यों कि मिथ्या मर्ज़ था जब बाहर से स्त्री आई उस ने देखा तौ पूछा कि तुम पाख़ाने को कब गये और कै दस्त आज हुए और पानी कहां से लिया बानिया बोला कि दिन भर अच्छा रहा घर आते ही दस्त का ज़ोर हुआ ओटे पर से लोटा लेकर चला गया स्त्री

बोली हत्तेरा भला हो उस लोटे में तो गेरू घोला हुआ अहोई काढ़ने को था झट बनिया उठ खड़ा हुआ भला चंगा तो थाही मग्न होकर अपना कर्म करने लगा इसी प्रकार मिथ्या जगत में सुख का भ्रम करके सदैव मनुष्य क्लेश को पाते हैं और समय पाकर शरीर गिरजाता है तब तक नहीं सोचते कि हमको इस असार संसार से उठ जाना है अर्थात् यह शरीर नहीं रहैगा

युक्ति ९

एक क़साई के पास बहुत सी भेड़ें थीं जब आवश्यकता होती एक को अपने काम में लाता क्योंकि उसका यही पेशा था उनमें एक भेड़ की ऊन अति उत्तम थी एक रोज़ कतरनी लेकर क़साई उस भेड़की ऊन काटने गया भेड़ ने जाना कि आज अवश्य मेरा नम्बर आया परन्तु जब क़साई ने ऊन काट कर छोड़ दिया तो जाना कि अब के तो बच गई उस भेड़ पर फिर ऊन बढ़ी तो फिर क़साई कैंची लेकर चला भेड़ ने जाना अबके नहीं छोड़ेगा परन्तु उसने फिर ऊन कतर कर छोड़ दिया इसी प्रकार पांच छः बार हुआ तब तो भेड़ को ख़ूब निश्चय होगया कि मारता नहीं फ़क़त ऊन उतारलेता है एक बार मार ही लिया।

दृष्टान्त

काल रूप क़साई के मनुष्यादि प्राणी मात्र भेड़ हैं बहुधा कुछ न कुछ रोग बहाने से मृत्यु पाते हैं परन्तु मरते समय तक ऐसा ख़्याल करते हैं कि अभी न मरेंगे एक दफ़ै बुख़ार आया था आराम होगया फिर रोग हुआ बोले कि पहले भी ऐसा ही रोग हुआ था फ़लां हकीम के इलाज से आराम होगया था फ़िर

आराम होजायगा यहां तक कि अन्त समय तक ऐसा ही ख्याल रहता है कि ऐसा रोग कई बार होचुका है सेहत होजायगी काल रूप कसाई एक बार भेड़ की तरह झट अपना काम कर-लेता है फिर ८४ लाख योनिके चक्र में पड़ कर अनेक दुःख पाया करता है वास्तव में बार्ता यह है कि बहुत से तो अज्ञानी और बहुत ही कम ज्ञानी महात्मा सन्यासी होते हैं बहुत से झूंठो में एक ज्ञानी सत्य वादी को ऐसे अश्रद्धक मूर्ख मंडली को समझाना कठिन होता है जैसा कि हंस और उल्लुओं के दृष्टांत में नीचे कथन किया है ।

युक्ति ६

एक हंस और उल्लू का एक वृक्ष पर दिन में समागमहुआ हंस बोला आज सूर्य्य की धूप तीक्षण मालूम होती है उल्लू बोला सूर्य्य कहां है हंस ने कहा उजेला काहेका होरहा है और गरमी किस की है देख तो सही उल्लूक को दिन में दीखता नहीं था बोला कि हंस तू बावला है सूर्य्य नहीं है आपस में यही झगड़ा होते होते हंस बोला कि हमारे तेरे सिवाय और कोई कहदे उस को हम तुम दोनों मान लेंगे उल्लू बोला बहुतों से कहलादूंगा तब हंस को साथ लेकर उल्लू उड़ा और एक उल्लुओं की मण्डली में लेगया जाकर उल्लू ने पूछा कि भाई किसी को सूर्य्यभी दीखताहै तब सब बोल उठे सूर्य्य कैसा हमको तो नहीं दीखता तब उल्लू ने हंस को प्रणाम किया और बोला अब भी मानोंगे या नहीं तब हंस चुपके से चल दिया और मार्ग में ये कहता आया कि बहुत से झूंठों में एक सच्चे की नहीं चलती ऐसे झूंठे मूर्खों से फिर न बोलना चाहिये ।

दृष्टान्त ६

इसी प्रकार ग़ौर करके देखिये कि महात्मा पुरुष उस ब्रह्म स्व प्रकाश को जो कोटानि कोटि सूर्य्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश स्वरूप है जिस के प्रकाश से सब कुछ देखा जाता है मूढ़ व मूर्खों को चौरासी लक्ष योनि के चक्र से बचाने के लिये दया दृष्टि करके जहां कही उपदेश करते हैं तौ उन को वह पदार्थ दृष्टिगोचर नहीं होता क्योंकि उन के देखने को वे नेत्र व बुद्धिही नहीं जिससे देख व समझलें बल्कि उलटी झकर२बकर२ करके हंस की तरह दिक् करते हैं तब सत्पुरुष ऐसे स्थान को छोड़ एकान्त स्थानों में जा रहते हैं वरनः मजाल है कि श्रद्धा करें और मन लगा के श्रवण करें तौ अपने स्वरूप का साक्षात् कार न करें इस में दृष्टान्त है ।

युक्ति ७

एक महाजन नित्य फेरी (बनजी) को जाया करता था उस्के केवल एक पुत्रही रह गया था और सब मृत्यु वशहोगयेथे नित्य अपने पुत्र को (दुपैर का भोजन) रख कर बता जाया करता था एक रोज़ ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि लड्डू उस्के खाने को बर्तनों में जो सौदा के थे रख कर बताने भूल गया और बनजी को चला गया जब दुपैर का समय हुआ लड़के को भूख लगी खाना देखा तौ जहां रोज़ रहता था नपाकर भूखा व्याकुल होगया एक अन्य मनुष्यने उसके बाप के हाथ से लड्डू वर्तनों में रखते देखे थे लड़के से पूछा क्यों रोता है वह बोला भूखा

मरा जाता हूं चाचाजी जाने आज खाना कहां रख गये हैं वह मनुष्य बोला कि बर्तनों में लड्डू रखते मैंने देखा था— तब वह लड़का खोजने लगा दस बारह बर्तन देख के कहने लगा कि यह आदमी दिल्लगी करता है चुपका संतोष कर बैठ रहा पीछे जब उसका बाप आया लड़का बहुत झुंझलाकर बोला आज तौ खूब भूखा मारा खाना कहां रख गये थे तब महाजन बोला इन बर्तनों में लड्डू रख गया था तब तौ लड़के ने यहां तक कोशिश की कि तलाश कर ही लिये,भोग लगा क्षुधा निवारण की—

दृष्टान्त

अब सोचना चाहिये कि वही लड़का वही लड्डू वेही बर्तन थे परन्तु विश्वास न करने से नमिले और बापके बतानेको सांचा जानकर विश्वास करके ढूंढे तौ मिल गये इसी प्रकार संसारी मनुष्यों को कोई गृहस्थी मनुष्य किसी विषय को ख़ास कर वेदान्त विषय का उपदेश करै तौ बनिये के लड़के के मुआफ़िक़ हंसी समझ उड़ा देतेहैं कुछ ध्यान नहीं देते और सत्य स्वरूप आत्मा को न जान कर वृथा मिथ्या बाद करते और आपसमें लड़ते हैं देखौ कितने मत पंथ आर्य्यावर्त में हैं और आपस में एक दूसरे की निन्दा करता है इसका कारण नीचे लिखी ८ वीं युक्ति से अच्छी तरह समझ में आजावैगा

युक्ति ८

एक अन्धों के ग्राम में हाथी निकला अन्धों ने जो चौपाल पर बैठे थे घंटे की आवाज़ सुन कर महापाति से पूछा यह क्या

है उसने उत्तर दिया हाथी है अन्धों ने आजिज़ी की कि भाई खड़ा रख ज़रा देर में हम देखलें ५ छः अन्धे दौड़े और हाथी से जालिपटे एकने कान टटोले दूसरे ने पूंछ तीसरे ने सूंड चौथे ने दांत पाचवें ने पैर छटे ने ऊपर पींठ पै हाथ फेर लिया फ़ीलवान ने आवश्यकता के कारण हाथी चला दिया. अन्धे जब चौपाल पर आये तौ पहला बोला क्यों भाई हाथी कैसा देखा दूसरा बोला ऊपर चौड़ा नीचे पतला थोड़े बाल ऐसा होता है पहले ने कहा झूंठा है सूपसा होता है तीसरा बोल उठा दोनों झूंठे हो ऊपर से गाउदुम चला आया है नीचे आकर एक कांटा सा होता है चौथे ने कहा तुम्हारी मति कटी है मूसल सा होता है पांचवां कहने लगा तुम पहुंचे नहीं हाथी खंभसा होता है छटा बोला भाई मानों चाहै न मानों हाथी बिटोरा सा (उपले चुनके एक लंबा चौड़ा ऊंचा बना देते हैं) होता है ग़रज़ कि उनमें आपस में खूब तकरार रही दैव संयोग से कोई सूझता वहां आ निकला अन्धों से पूछा क्या झगड़ा है सबनं हाथी देखने का अपना २ हाल कह सुनाया तब तौ सूझता बोला तुम सब सच्चे हो हाथी का अंग थोड़ा २ सबके हाथ पड़ा है चलो हमारे साथ सब हाथी दिखादें वह सबको ले गया और एक जगह जाकर छओं अन्धों को सब हाथी का अंग टटुलवाया तब सबकी लड़ाई मिटी और हाथी जान लिया

दृष्टान्त

इसी प्रकार संसारी पुरुष कोई सूर्य्य कोई देवी कोई गणेश कोई शिव कोई विष्णु को परमात्मा जान आपस में वाद बिवाद

कर लड़ते और अपना अमोल समय (जो चाहे जितना धन दो गया हुआ एक सैकण्ड भी नहीं आसक्ता) बृथा खोते हैं और अपना साक्षात् आत्मा जो सर्व जगह लट २ प्रकाश करता है और सर्व प्रपंच दृश्या दृश्य उसी के अन्तर भूत हैं उसको नहीं जानते हां कोई सूझते की तरह महात्मा आ निकलें तौ संसारी अन्धों की आंखे खोल कर संपूर्ण हाथी की तरह उनको समझा कर सबकी लड़ाई मिटा परम शान्त करदेतें हैं फिर तौ सर्व जगह व्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्य ऐसा होजाता है जैसा इस ९ वीं युक्ति में चक्रवर्ती राजा ने उत्तर दिया

युक्ति ९

एक सौदागर घोड़ों की सौदागरी करता था दैव संयोग से एक बार एक घोड़ा उसको ऐसा मिला कि उसकी क़ीमत कम लोग जान सक्ते थे सौदागर घोड़े के बेचने निमित्त निकला प्रथम एक ज़मीदार के यहां गया और घोड़ा दिखाया पसंद किया जब क़ीमत का ज़िकूर आया सौदागार ने १०००) रुपये मांगे इससे कम न लूंगा ज़मीदार ने पूंछा इसमें क्या गुणहै जो इतनी क़ीमत मांगते हो सौदागर बोला यह जिधर को चलदेता है चला ही जाता है फिर लौटता नहीं ज़मीदार बोला आपको और घोड़े को दण्डौत है लेजाइये मेरे पास कुल २५ गांवकी ज़मीदारी है उससे बाहर लेगया तौ ज़मीदारी भी गयी तब सौदागर किसी राजाके यहां लेगया वहां २०००) रुपये मोल कहे राजाने भी ज़मीदार की तरह घोड़ेका गुण पूछा सौदागर ने भी वही उत्तर दिया तब राजानेभी इनकार किया कि मेरा राज पांचसौकोस के बीचमें है यह

घोड़ा देश निकाला देने वाला मालूम होता है तत्पश्चात् सौदागर चक्रवर्ती राजा के यहां लेगया जब मौल्य हुआ तौ १० हज़ार रुपयेमांगे महाराजाने गुणपूछा सौदागरने वही बतलाया जो ज़मीदार व राजाको बतलाया था तबतो चक्रवर्ती राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और कहा १० हज़ार क़ीमत १ हज़ार बख़्शीश सौदागर को दो और घोड़े पर ज़ीन रखवाओ राजा चढ़ा और घोंड़े से बोला चल भाई जहां तेराजी चाहे हम चक्रवर्ती हैं जहां जायगा वहीं हमारा राज्य है॥

दृष्टान्त

यह मन जो है सो ऐसा घोड़ा है कि जिधर बिषयों में फंसता है फिर मुड़ताही नहीं इसके वास्ते बिचार करके चक्रवर्ती राजा-वत् बनजावै क्योंकि परमात्मा सर्ब व्यापक है और वही स्व स्वरूप है इसमें बहुत सी श्रुति है तथा ही-श्लोक– देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि- यत्र २ मनोयाति तत्र २ समाधयः। जो शंका करै हज़ारों जगह देखले जब ऐसा गुरु कृपा से होजावे तौ अभ्यास करै कि जहां ये मनीराम जी जावें वहां देखे कि नाम रूप उपाधी को जो नाशवान है उसके पश्चात् केवल सत् चित आनन्द ही रहता है वही आत्मा वही ब्रह्म सोही परमेश्वर व भूमा इत्यादि नाम का है यथार्थ में नाम रूपसे प्रथक सत्य स्वरूप है असलमें तो यों है कि सनातन धर्म्मों का पालन करने से मन अपने आप शांत होजाता है जिनमें से काम, क्रोध; लोभ, मोह, इनको प्रथम जीतना चाहिये इसको एक युक्ति करके समझाते हैं

युक्ति १०

एक जाट खेती का पेशा करता था एक रोज़ ४ आदमी जिन्में १ ब्राह्मण दूसरा वैश्य– तीसरा जाट– चौथा चमार था उसको

चोरी से खेत काटा और पोट बांध कर तयार थे कि चलैं जब तक खेत वाला जाट आगया मन में सोचा ये चार हैं मैं अकेला क्यों कर इनको पकड़ूं बुद्धि पर ज़ोर लगाया तौ सूझपड़ी ब्राह्मण को पालागन किया और कहा आपका दिया कभी वृथा नहीं जाता जब चाहो लेजाया करो फिर बनियें से कहा लाला जी राम २ आप हमारे बौहरे हैं हमेशा आप लोगों से बीज लगा ने को आवश्यकतानुसार कर्ज़ ले आते हैं जाट से कहा भाई साहब जुहार तुम्हारा हमारा एक मामला है बिरादरी ठहरे सब मिल के इस चमार बेईमान से तौ पूछो तू कैसे आया सबने ख़ूब ठोक पीट दुरुस्त किया और बांध कर डाल दिया तब जाट बनिये से बोला साहजी ब्याज बट्टा तौ छोड़ते नहीं पराया खेत काट ने कैसे आये उनकी भी मरम्मत करके बांध कर डाल दिया तब ब्राह्मण से कहा क्यों रे भिखारी ये तूने बिना पूछे क्यों खेत काटा दोनों जाटों ने मिल के उसको भी बांध दिया अब जाट रहा सो खेत वाले जाट से बहुत कमज़ोर था पकड़ कर एक पटक मारी और छाती पर चढ़ बैठा क्यों मामा तेरे खेत नहीं था जो यहां आया गरज़ चारों को बांध लिया

दृष्टान्त

इसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, ये चार चोर इस मन्दिर में से ब्रह्मचर्य. दया. वैराग. इत्यादि को चुराते हैं इनको एक २ करके जो कम ज़ोर हो खेत वाले जाटके तुल्य बश करे और शुद्धान्तः करण करके अपने आत्म स्वरूप में मग्न होजाना चाहिये– बाद स्वरूप ज्ञान के बिषय लगे रहैं तौ वे कुछ

हारिज नहीं होते जैसे दग्ध अन्न या बीज से कोई अंकुर नहीं निकलता अभ्यास जो जन्मानजन्म और इस जन्म का बाल्यावस्था करके अब तक पड़ा है उसका यही कारण है जैसा इस युक्ति में नीचे बर्णन किया है

युक्ति ११

एक मनुष्य किसी जंगली मनुष्य को पकड़ लाया जंगली मनुष्य बन में *आखेटके सिवाय हमेशा बृक्षोंके पत्ते खाया करता था उसको हलवा और अच्छे२ भोजन जो मिलतेथे बड़ा ही प्रसन्न रहता था परन्तु जहां कहीं पत्ते देखे झट उठा कर खालिया करै असली मनुष्य ने जंगली से कहा कि अरे बावले मूर्ख तू ऐसे उमदा २ भोजन छोड़ करके पत्ते क्यों खाया करता है उसने जवाब दिया कि मुझे भी ये हलवादि भोजन अति उत्तम लगते हैं परन्तु क्या करूं बालपन से इस शरीर की यही आदत पड़ी हुई है एक बारगी नहीं छूट सक्ती छूटते २ छूट जावैगी

दृष्टान्त

इसी प्रकार यदि ज्ञान होने के पश्चात् कोई स्वभाव शरीर का ऐसा पड़ रहा है कि नहीं छूटता तौ कोई हर्ज नहीं परन्तु फिर भी सोचना चाहिये कि परमानन्द को छोड़ बिषय रूपी दुःखों के बंधन में आदत के बसीभूत होना भी ऐसा ही है जैसा इस १२ वीं युक्ति में कथन है

* शिकार-

युक्ति १२

एक पुरुष अंधेरे में जाता था मार्ग में एक रस्सी पड़ी थी उसको देख सांप का भ्रम कर पछाड़ खा पत्थर की चटानों पर गिरपड़ा बड़ी सख्त चोट से पीड़ित हुआ जब वहां और मनुष्यों ने देखा कि एक आदमी गिर पड़ा चिराग़ लाये तो वही पीड़ित मनुष्य सांप के भय से बचा लोगों ने पूछा क्या हुआ कहो तो सही उत्तर दिया यहां सांप था उसके भय से गिर पड़ा हूं दीपक से जो लोगों ने देखा तो असल में जेवड़ी थी ही उस पीड़ित मनुष्य को दिखाई और कहा भाई यह तो रस्सी थी तुमको भ्रम होगया फिर तो वह मनुष्य भ्रम त्याग अपने घर को चला आया परन्तु चोट उसकी एक माह से कम में अच्छी न हुई

दृष्टान्त

यह संसार भ्रम से असत्य का सत्य भाषता है ज्ञान होने पर मिथ्या भ्रम इसका फ़ौरन नाश होजाता है परन्तु शरीर की चोट रूपी अनेक जन्म व इस जन्म की माता पितादिक बंधुओं और धन ऐश्वर्य रूप चोट रफ़ते २ सब ठीक होकर परम शांत होकर अपने ही में सब प्रपंच को रचा हुआ देखता है और ऐसा बाज़ीगर के तुल्य होजाता है जैसा १३ वीं युक्ति में बर्णन है-

युक्ति १३

सब संसार के लोग जानते हैं कि बाज़ीगर चमड़े का सर्प

और पंख का कबूतर और गुठली का वृक्ष बनादेता है परन्तु बाज़ीगर अच्छी तरह से खेल करते समय भी जानता है कि मैं झूंठा तमाशा कर रहा हूं और उस की सब तर्कीब उस के ज़हन में है।

दृष्टान्त

इसी प्रकार ज्ञानी पुरुष को यह जगत बाज़ीगर के तमाशे-वत अच्छी तरह मिथ्या प्रतीत होता है परन्तु और अज्ञानियों को जैसे तमाशे वाले जानते हैं यह सत्य प्रतीत होता है और यह तौ निश्चय है अन्तर वृत्ति से तमाशे वाले भी जानते हैं कि यह झूंठा है परन्तु उस में भी अस्ति भाति प्रिय रूप जो हैं सो सत्य ही है इसी से उन को सुख और मज़ा आता है अब ग़ौर का मुक़ाम है कि जब झूंठे प्रपंच में सुख मानते हैं तौ जिस वक्त सत्य स्वरूप का साक्षात् कार होगा तौ जो आनन्द उस अनुभव से होगा उस को कोई लिख कह नहीं सकता—इस को कुछ एक युक्ति कर कथन करते हैं।

युक्ति १४

देखो हलवाई जब खांड़ का मैल निकालता है तौ एक छन्ने में मैल को जो मिट्टी है ख़ूब निचोड़ के यहां तक कि खांड़ की बून्द भी निकलती है खींचलेता है फिर उस मिट्टी को पृथ्वी पर फैंक देता है उस को कुत्ते ख़ूब शौक़ से लड़२ के

यहां तक खाते हैं कि ज़मीन तक चाट जाते हैं - तो असली खांड़ का स्वाद देखना चाहिये जिस के लालच मिट्टी खाजाते हैं।

दृष्टान्त

इसी प्रकार विषयी जन किसी सत्संगी विचारवान या कहीं साधू महात्माओं से दो चार बातें सुनकर परम सुख मानते हैं और विषय भोग में भी सुख मानते हैं यह केवल खांड़ की मिट्टी के तुल्य सुख है यदि असली सुख का जो अपने आत्मा के जानने से होता है किसी सद्गुरु की कृपा से जानलें तौ उन को अत्यंत अर्थात् परम सुख प्राप्ति हो परन्तु वे बिचारे करें क्या और किस तरह उस परमानन्द को प्राप्ति करें उन की तो जन्म से ही गोली बदल गई जैसा कि इस १५वीं युक्ति में वर्णन किया है।

युक्ति १५

एक अच्छे हकीम के पास दो एक से मरीज़ इलाज को गये उन की आंखें दुखती थीं और हर वक़्त पेटमें दोनों के दर्द होता था जब दोनों ने अपना २ हाल हकीम से कहा तौ हकीम ने दोनों को चार२ गोलियां दीं कि ये गोली पेट पै लेप करना दूसरी जो सफ़ेद रंग की हैं उन को गरम पानी से पलकों पर घिस के लेप करना एक रोगी उनमें चतुर था उस

ने झट आंख की गोली इमामें में आंख के पास और पेट की धोती में पेट के पास बांध ली घर जाकर ठीक इस्तैमाल किया सेहत पाई दूसरे मूर्ख ने दोनों गोली एक ही ठौर रूमाल में बांध कर कहा कि अब क्या भूलेंगे सफ़ेद रंग की आंखों की है घर आते२ उस को विस्मरण होगया पेट की गोली आंख पै और आंख की पेट पर लगाली आंख और सूझ गई पेट भी पहले से अधिक दर्द करने लगा संयोग से दूसरे दिन फिर हकीम के जाते हुए राह में भेट हुई सेहत वाले से दूसरे ने पूछा कहो भाई वही दवा लगाई थी कहा हां हां और दोनों बातों को सेहत है फिर तौ दूसरा बोला अरे भाई हकीम दग़ाबाज़ बेईमान का बुरा हो जो ऐसी फ़रेब की बात की जो मुझे और गोली देदीं तुझे और; तैंने भाई कुछ देदिया होगा उस ने कहा दिया तौ नहीं वायदा किया था तब दूसरा बोला ठीक है आसरे पर ऐसा हुआ है चलौ कैसी सुनाता हूं हकीम जी के पास पहुंचते ही बोला क्यों साहब यह धोखे बाज़ी हम क्या आराम होने पर कुछ न देते जो दोनों की गोली में फ़र्क़ कर दिया हकीम बोला ख़ैर तौ है बैठ तौ सही क्या हुआ मैंने एक बक्स मैं से एकसी गोली दी थीं फिर बक्स खोलकर दिखाई कि बता इन ४ में कौनसी आंख मैं लगाई थी और कौनसी पेट में तब मरीज़ ने सफ़ेद पेटपै दूसरी आंख पै बताई जिसको आराम होगया था उस मरीज़ से पूछा तौ उसने ठीक बताई तब हकीम

बोला भाई तेरा क़सूर है गोली बदल गई मेरा कुछ नहीं है फिर उसको नई गोली दी और जब उसने जाकर ठीक २ लगाई तो सेहत होगई –

दृष्टान्त

इसी प्रकार विषयी मनुष्य जिज्ञासू बन गुरू महात्मा के पास अपना अज्ञान रूपी रोग निवारण करने जाते हैं गुरू महा-कृपा कर सबको एकसी युक्ति देकर ज्ञानके साधन बता देते हैं जो ठीक उसी क्रिया से करता है उसको अपने आत्मा का दीदार होकर चौरासी के फंदे से निकल निर्द्वन्द नित्य मुक्त हो जाता है जो श्रद्धा न करके यत्नके बिपरीत करते हैं उनको ठीक फल नहीं होता इसमें गुरू को दोष देते हैं असल में अपना क़सूर है परन्तु गुरू भी सच्चा मिले तबही काम बनता है वरनः नहीं जैसा इस १६वीं युक्तिमें कथन किया है।

युक्ति १६

एक शख्स को यह मरज़ था एक की दो चीज़ दीखा करती थीं वह एक नामी हकीम को तलाश करता एक हकीम के यहां पहुंचा दरवाज़े से इत्तला कराई एक मरीज़ आया है उसको यह मरज़ है हकीम साहब का हुक्म हुआ बैठक में बैठें हम आते हैं हकीम साहब ज़रूरियात से फ़ारिग़ होकर ऐनक लगाये निकले बैठक में वही एक मरीज़ था परन्तु हकीमजी साहब ने पूछा कि

क्यों भाई तुम ४ में किसको यह मरज़ है जो एक के दो दीखते हैं मरीज़ बोला जनाब चार कौनसे हकीम साहब ने जिनको एक के चार दीखते थे हाथ के इशारे से बताया कि तुम चार बैठे नहीं हो मरीज़ने कहा भला आपको एक के चार दीखते हैं मेरी दण्डौतहै अपने मकान को जाता हूं तो देखना चाहिये ऐसे हकीम से क्या होसक्ता है– जो अपना मर्ज़ नहीं खोसक्ता।

दृष्टान्त

इसी प्रकार जो पूर्ण महात्मा गुरु होते हैं उन्हीं से ये अज्ञान रूपी मरज़ जो कुछ नहीं और लाखों वस्तुएं दिखाई देती हैं जाता है कच्चे से नहीं जाता परन्तु मुश्किल यह है कि अच्छे हकीम की पहचान जैसी मुश्किलहै महात्मा की उससे भी अति ही कठिन है जिसको इस नीचेकी युक्ति द्वारा सुनाते हैं

युक्ति १७

एक स्त्री के तरुण पुरुष पति और एक बालक बच्चा था स्त्री के कटाक्षों को पति उसका अच्छी तरह जानता था परन्तु लड़के को कुछ भान नहीं जब बालक तरुण होगया तो उसको भी उन कटाक्षों की दृष्टि होगई ॥

दृष्टान्त

इसी प्रकार महात्मा की शनाख्त की दृष्टि महात्मा को ही

होती है व्यवहारी अज्ञानी पुरुष बच्चे बालकवत उनके जानने की दृष्टि ही नहीं रखते फिर क्यों कर कोई जान सक्ता है कि महात्मा हैं या कोई प्रपंची फिरता है क्योंकि महात्मा के शरीर पर कोई चिन्ह ऐसा नहीं होता जिससे अच्छे की पहचान कर-सके और जो संसारी जीव देखता है सो बाहर के बस्त्रादिक ही देख सक्ता है अंदरूनी हालत को कोई पूरा ही जानता है परन्तु ऐसा भी न चाहिये जैसा इस नीचे की युक्ति में बर्णन है

युक्ति १८

एक शख्स को बुख़ार आता था वह हकीम के पास गया दैव संयोग से हकीम जी भी उसी मर्ज़ में पीड़ित देखे सलाम किया और वापिस चला हकीम ने पूछा भाई क्यों चल दिया मरीज़ बोला जनाब बुख़ार आता था इलाज को आया था आप को भी बुख़ार में मुबतला पाया तौ सोचा जो अपना इलाज नहीं कर सक्ते तौ दूसरे का क्या करेंगे हकीम ने कहा भाई साहब हम शरीर के हाल को ख़ूब जानते हैं कि जिस सबब से बुख़ार आगया है तुम अपना इलाज करो नुसख़ा ले जाओ आराम हो जायगा लेकिन एक न सुनी चला गया

दृष्टान्त

जो साधू महात्मा के पास अपना अज्ञान रूपी मर्ज़ दूर करने जावै तौ महात्मा की देह क्रिया पर दृष्टि न करै अपने

असली प्रयोजन को जैसा कृपा करके आज्ञा करैं वैसाही पूरा २ अमल करै अवश्य ही अपने आनंद स्वरूप आत्मा का अनुभव कर परम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्ति करेंगे

युक्ति १९

एक साधू हाथी पर जिसकी सोने की अंबारी थी और बहुत सेवक उनके साथ थे राह में एक राजा मिला जो उसी तरह सोने की अंबारी के हाथी पर सवार अपनी फ़ौज सहित शिकार को जाता था राजा ने नमो नारायण करके साधू से पूछा कि हम आप इस वक्त़ एक से हैं क्या अन्तर है तब साधू ने राजा से कहा हाथी खड़ा कर तुझे अन्तर बतावें जब राजा ने हाथी खड़ा किया साधूने राजा को नीचे उतार लिया और हाथ पकड़ कर आगे को चल दिये जब आधे मील पहुंचे तौ राजा बोला महाराज कहां चलते हो साधू ने उत्तर दिया जहां हमारी मौज आवेगी चलेंगे न तू लौट न हम- दोनों हाथी और फ़ौज और राज व सेवक व ग्राम हम तुम दोनों छोड़ कर चले हैं तब तौ राजा शरमिन्दा हुआ और हाथ जोड़े कि महाराज मुझ से तौ नहीं छोड़ा जाता- साधू ने कहा बच्चा यही हमारे तेरे में अन्तर है-

दृष्टान्त

इसी प्रकार जो सत्संगी लोग गृहस्थ में ही बिचार के

अपने आत्मा का दीदार करें तौ दूसरे विषयीजन उनसे ऐसा ही कहतेहैं कि हम तुम में क्या फ़र्क़ है सो ऐसा नहीं कहना चाहिये बल्कि उनकी दृष्टी अन्दरूनी को देखना चाहिये बिषयी जन उनको कदापि नहीं पाते हैं क्योंकि उनको वह दृष्टि नहीं अर्थात् उनकी रम्ज़ को न जान कर उस कुत्तेवत भूसते हैं जैसा कि इस २० वीं युक्ति में कथन है--

युक्ति २०

एक शहर में एक रात्रि को चोर आये तौ जिस मुहल्ले में चोर थे उसके कुत्ते भौंकने लगे उनको सुन कर दूसरे मुहल्ले के भी कुत्ते भौंके परन्तु क्या बिलक्षणता हुई कि चोरों के मुहल्ले वाले कुत्ते तौ चोरों की ओर मुंह करके भूसते थे परन्तु दूसरे मुहल्ले के कुत्ते दूसरी दिशा की ओर दृष्टि करके भौंके यथार्थ यह है कि कुत्ते सिर्फ़ उन कुत्तों को देख के भौंकने लगे नकि चोरों को

दृष्टान्त

इसी प्रकार बिषयी पुरुष सतसंगी विचार वानों को देख२ के उनके से आचरणादि करके फ़ख़र करते हैं परन्तु उनको यह रम्ज़ नहीं माळूम होती जो कि सत्संगियों को है बड़े पश्चाताप का मुक़ाम है कि ये लोग बिलकुल तत्व ज्ञान की तर्फ़ ध्यान नहीं देते हालांकि महात्मा लोग उनको चौकीदार की तरह जैसा कि २१ वीं युक्ति में कथन हैं दिन रात्रि जागियों२ करके पुकारते हैं

युक्ति २१

एक साहूकारने चौकीदार से पूछा कि तू हमको रोज जागो २ करके जगा देता है इसका क्या कारण है चौकीदार ने उत्तर दिया श्री महाराज आप जब सो जाते हो तौ आपको याद भूल जाती है। इस कारण फिर जगाना पड़ता है ॥

दृष्टान्त

महात्मा सद्गुरु जो कृपा करते हैं तौ विषयी जानोंको बार२ दया करके घोर माया के नशेसे जगाते हैं फिर भी भूलके गड़ बड़ में पड़जाते हैं फिर जगाने की आवश्यकता होती ही है ॥

युक्ति २२

एक शख्स् ने किसीसे पूछा कि देवदत्त का मकान कौनसा है उसने बतलाया कि वह मकान है जिस पर कौआ बैठा है वह मनुष्य उस मकान की ओर चला इतने कालमें कौआ उड़गया तब भी मुतलाशी शख्स् ने देवदत्त का मकान जान लिया क्यों कि उसको कौएने निशान दिया था।

दृष्टान्त

इसी प्रकार किसी शिष्य ने गुरु से पूछा महाराज आप फ़रमाते हैं वृत्तिसे ज्ञान होता है परन्तु वृत्ति अंतः करण का कार्य्य

है और अंतः करण नाशवान है तौ मैं कह सकता हूं कि वृत्ती भी नाशवान हुई क्योंकि जिसका कारण मिथ्या होता है उसका कारज अवश्य मिथ्या होगा इसी भांति बृत्ति ज्ञान का कारण है सो ठहरी मिथ्या तौ ज्ञान भी मिथ्या हुआ पस ऐसे ज्ञानसे मोक्ष भी होना संभव नहीं सो शंका मिथ्या है क्योंकि जब काक उड़गया फिर भी देवदत्त का मकान जिस तरह मिलगया उसी तरह वृत्ति भी ज्ञान कराके शांति होजाने से मोक्षमें रंचक खामी नहीं आती ॥

युक्ति २३ बेर के बृक्षका दृष्टान्त

वृन्दावनमें एक बेरका वृक्ष कटकर छोटासा ठूंठ एक जगह रास्ते पर रह गयाथा अक्सर साधू महात्मा लोगोंके उसकी ठोकर खा२कर चोट लगी बल्कि बाज़२के दांत तक भी टूटगए तब बहुत लोग कहने लगे कि अब घोर कलयुग आगया किसी साधू महात्मा में सामर्थ नहीं संयोग से वह ठूंठ बर्सात में हरा होकर ऐसा फूला फला कि फलों के बोझसे गिराही जाता था तब सब लोगों को और भी आश्चर्य हुआ कि अब कुछ ठीक ठिकाना किसी साधू का न जाने दैवगत एक रोज़ ऐसी घोर आंधी पानी झक्कड़ आया कि वह वृक्ष जड़के सूतों सहित जो बहुतही बारीक२ होते हैं उखड़ कर अलग जापड़ा तब जिज्ञासू श्रद्धक लोग कहने

लगे कि देखो इसके फूलने का यह कारण था जो न फला फूला होता तो बे बोझ क्यों कर उखड़ता ॥

दृष्टान्त

इसी प्रकार संसारी कुकर्मी मनुष्यों को जो मनुष्य फलते फूलते अर्थात् धन संतान की बृद्धि पाते देख कर कहते हैं कि फ़लां शख्स कैसा बेईमान मिथ्या वादी व अधर्म्मी है सो इस में यों समझना योग्य है कि यह उसके पूर्व ज़न्म या इस जन्म का किसी उत्तम कर्म का फल है और अब जो अधर्म्म करता है उसका फल अवश्य आइन्दा बुरा भोगेगा इस जन्म में हो या दूसरे जन्म में इस कारण परमात्मा को न्यायकारी जान कर मनुष्यों को उचित है कि सदैव उत्तम २ कर्म करें और मिथ्या छल फ़रेब चोरी हिंसा इत्यादि बुरे कर्मों से बचें और ध्यान दें कि जगत की तीन ईषणा अर्थात् पुत्रेषणा, लोकेषणा, वित्तेषणा, यानी पुत्र धन हशमत की इच्छा से पूर्ण सुख होना असंभव है क्योंकि धनी वहु कुटंबी व राजा लोग सभी दुखी देखे जाते हैं इस कारण शुभ कर्म करके अंतःकरण को शुद्ध करके गुरुवेदादि महा वाक्यों द्वारा निर्वाण पद पाने की कोशिश करें जिससे नर तन दुर्लभ का फल जो मोक्ष है पावें ॥

युक्ति २४

एक लड़का अपने पिता के साथ किसी शहर में बाज़ार की

सैर करने गया राह में एक दूकान पर बड़ा आईना रक्खा देख कर पिता से कहने लगा देखो पिता जी मैं इस आईने में हूं पिता बोला हां पुत्र दीखता है जब आगे गये तब लड़के ने पिता से फिर कहा कि पिता जी अब भी मैं आईने में हूं पिता बोला अब नहीं तब पुत्र ने कहा मैं अब भी आईने में हूं चलो दिखा दूं लड़का लौट कर फिर पिता के साथ गया ज्यों ही आईने के सन्मुख पहुंचा फिर बाप से कहा देखो मैं आईने हूं तब पिता फिर आगे चल दिया लड़का फिर बोला कि हम तो उसी आईने में हैं पिता बोला कि लड़के नहीं लड़का बोला चलो फिर दिखा दूं इसी प्रकार बार २ लड़के ने कहा और पिता ने वही उत्तर दिया कि जब तू सन्मुख जाता है तभी दीखता है फिर नहीं

दृष्टान्त

इसी प्रकार खूब ध्यान देकर देखो कि जब दृष्टि पड़ती है तभी वृत्ति तदाकार होकर हर एक वस्तु भासती है अर्थात् वृत्ती के कारण ही लयचिंतन होता है जैसे स्वप्न के पदार्थ स्वप्न तक ही दीखते हैं फिर जब जाग्रात होती है नहीं दीखते इसी प्रकार आत्मा का साक्षात्कार होनेसे फिर संसार जाग्रत में भी बिलकुल स्वप्नवत दीख पड़ता है वास्तव में मरीचका के जलवत् है परन्तु है नहीं और दीखता है यह महिमा अविद्या की है क्योंकि माया का लक्षण लिखा है अघट न घटना पटीयसी माया- अर्थात् जो

असंभव हो उसका संभव कर दिखावैं उसको माया कहते हैं परंतु यह लड़के के प्रतिबिंब वत भ्रम है कि उसको एक धारा प्रवाह रूप बने रहने का भ्रम होगया वरना विचार लो लड़का जब चला जाता प्रतिबिंब दर्पण में नहीं रहता इसी प्रकार जब वृत्ती पदार्थ से हटी पदार्थ भी जाता रहा– इसको और युक्ति से दृढ़ करता हूं ॥

युक्ति २८

देखो जब जलती बनेती फिराई जाती है तौ उसका एक सिरा दूसरे से बनेती की लकड़ी लंबाई भर दूर होता है परन्तु जब उसको घुमाने से चक्र बंधता है तो एक गोलाकार ही दृष्टि आता है असल में घुमाने से बेगके कारण वृत्ताकार दृष्टि पड़ता है वास्तव में दोनों किनारों के उस बेगके भ्रमण से प्रकट होता है ॥

दृष्टान्त

अब देखो वृत्ति नेत्र द्वारा निकल कर जैसी शीघ्र बनेती फिरती है उसी वेगमें होकर गोलाकार गतिमें होजाती है इसी प्रकार जल्द २ या दुबारा तिबारा देखने से बारम्बार यही भान होता है कि यह तौ वही पदार्थ है जो कलथा या अभी देखा था असल में वृत्तिके हटते ही वह पदार्थ भी नष्ट होजाता है बल्कि नष्ट होना भी उस हालत में कहसक्ते हैं कि जबहो वास्तव में है

ही नहीं सब बृत्ति ही तद्रूप होजाती हैं पस ध्यान देकर सोचना चाहिये कि जिस अंधेने जन्मसे रंग नहीं देखेहों तौ रंगका भान नहीं होसक्ता इसी प्रकार स्पर्श शब्द रस गंधादि सब वृत्तिके ही कारण है जब वृत्ती सिमिटतीहैं सब पदार्थ नष्ट होजातेहैं और जब फैलती हैं तबही फिर दृष्टि आने लगते हैं और यही वृत्ति आईने में मुख दीखने का सबब होता है ये सब बातें सद्गुरु कृपासे ही हासिल होतीं हैं क्योंकि परमात्मा वाणी का विषय नहीं जो बाणी का विषय होता तौ हज़ारहा पंडित जो चारों वेद को अच्छी तरह अध्ययन करके कोरे क्यों रहजाते यह दृष्टि केवल गुरुकृपा से होती है इसी कारण आत्म विद्या बिना गुरुके कदापि फल दायक नहीं होती क्योंकि यह विद्या सीने बसीने चलती आई है इस लिये गुरुकी महिमा मुक्ति से बढ़कर है इसको एक युक्ति कर समझाता हूं ॥

युक्ति २६

एक न्यारिया हमेशा अपना काम करता रहता था एक रोज़ दिलमें सोचा कि इस राजा के दरवाज़े परसे रेत कंकड़ी झाड़ लिया करो राजा का बाहर भीतर से अत्यन्त साफ़ झाड़ बुहारा मकान रहता था कंकड़ी तक नहीं रहती थी न्यारिया रोज़ उस जगह झाड़ जाया करे इसी तरह करते२ उस को दस बारह वर्ष गुज़र गये लोगों ने पूछा अरे न्यारिया तू बावला है

यहां से क्या लेगा न्यारिया बोला राजा का द्वार है यहां से न मिलेगा कहां से मिलेगा जब यह ख़बर अहलकारों ने राजा तक पहुंचाई तौ राजा बोला जो न्यारिया को ऐसा यक़ीन है तौ कुछ ज़रूर मिलना चाहिये बेश क़ीमत १ हीरा लेकर झाड़ ने की जगह न्यारिये को धूल बटुरवाके मिलवा दिया जब न्यारिये ने हस्ब मामूल झाड़ना शुरू किया तौ झाड़ते२ वह मोती दृष्टि पड़ा तुरंत उठाकर जोंहरी के पास लेगया और मन बांछित धन पाया क्योंकि हीरा अव्वल दरजे का था फिर तौ ख़ूब गुलछरें उड़ने लगे परन्तु अपना काम मामूली बन्द न किया तब लोगों ने पूछा अरे मूर्ख इतना धन हीरे से मिला फिर भी झाड़ना नहीं छोड़ेगा तब न्यारिया बोला जिस द्वार से मैंने ऐसा पदार्थ पाया उस को ज़िन्दगी भर छोड़ ने को जी नहीं चाहता है ।

दृष्टान्त

इसी प्रकार आत्म जिज्ञासू को सद्गुरु कृपा कटाक्ष से ज्ञान होकर मुक्ति होती है फिर भी मुक्ति पाने पर वे गुरु के चरणों में प्रीति रखते हैं क्योंकि सब जानते हैं कि भवसागर से मंझधार में अटकी नैया का खिवैया सिवाय गुरु परमात्मा के कोई नहीं इसी कारण श्रद्धक शिष्यों ने मुक्ति को गुरु चरण पै वार दिया है अपना क्या २ हाल लिखूं गुरु कृपा से परमानन्द

प्राप्ति होकर अब चित्त गुरु चरण कमलों में पड़ा रहने को ही चाहता है ।

युक्ति २७

एक शख़्स अपने पुत्र को गर्भ में छोड़ कर प्रदेश कोही चला गया पीछे पुत्र उत्पन्न हुआ २० वर्ष तक उस का पिता प्रदेश से न लौटा लड़का रोज़गार को बाहर निकला कभी मुसाफ़रत की तकलीफ़ न उठाई थी बीमार होगया एक शहर की सराय में गया वहां मुसाफ़रों की ऐसी कसरत थी कि जगह बिलकुल न थी इत्तफ़ाक़ से लड़के का बाप भी उसी सराय में ठहरा था और उस की कोठरी में जगह भी थी परन्तु उस ने भटियारी से कुल कोठरी का दाम ठहराकर यह क़रार कर लिया था कि और मुसाफ़िर न ठहरने दूंगा भटियारी व लड़के ने हरचन्द चाहा कि यह कोठरी में ठहरने दे लेकिन उस ने न माना तब वह लड़का लाचार होकर उसी कोठरी के दरवाज़े पर पड़ रहा रात को जब बीमारी का ज़ोर हुआ चिल्लाने और कराहने लगा उस के बाप ने भठियारे को बुला कर कहा कि इस को उठा दो हम को सोने नहीं देता वरनः हम कोठरी के पैसे न देंगे भटियारे ने उसे उठाकर एक दरख़्त के नीचे डाल दिया सरदी का मौसम था जब ग़ाफ़िल हुआ पुलिस ने आकर उस का पता निशान सब लिख लिया उस के शरीर का भोग पूरा

होचुका था रात में ही मर गया सुबह उस का बाप उठा और उस की सकूनत वल्दियत देखी और सूरत शबाहत उमर मिलाई तौ निश्चय होगया कि यह मेरा पुत्र है जिस को गर्भ में छोड़ा था तब तौ ख़ूब डीक मार २ कर रोया और बोला कि मैंने ऐसी बेरहमी की कि अपने पुत्र को न जान कर ऐसी बीमारी व सरदी की हालत में बाहर निकाल दिया हाय अफ़सोस सद अफ़सोस ।

दार्ष्टान्त

अब ध्यान देनेका मौक़ा है कि जब तक लड़के के बापने अपना लड़का न माना कैसी निर्दयता या बेरहमी की और जब निश्चय हुआ तौ कैसा पश्चाताप किया यथार्थ में सुख दुःख मन के धर्म हैं क्योंकि मन ने जब अपना न माना उसके उठाने का सुख हुआ और मरने पर जब अपना समझा उठाने का बड़ा भारी शोक किया पस मनीराम जी को स्थिर करना यही परम सुख का यत्न है ॥

दृष्टान्त

एक नाव में पेड़े बांटना और अपने शत्रूको दूसरे किनारे पर डूबता देख कर भी नाव डूबने का भय न खाना ॥

दार्ष्टान्त

संसार रूपी नौका में शत्रुओं को मरते देख कर आप खुशी मानना ॥

दृष्टान्त

नीम के पत्तों में पृथ्वी का भाग जलका कटुतादि सब भाग हैं परन्तु कोई भाग प्रथक नहीं।

दार्ष्टान्त

इसी प्रकार पंच कोषों में कोई भीएक दूसरे से प्रथक नही है परन्तु एक से दूसरा सूक्ष्म रहता है ॥

युक्ति २८

एक पहाड़ परसे एक गड़रिया शेरका बच्चा पकड़ लाया उसको भेड़ बकरियों में परवरिश किया जब बड़ा हुआ एक रोज़ गड़रिया भेड़ बकरियां चराने पहाड़ की तरफ़ लेगया वहां एक शेरने रेवड़ को देख के गर्जना की शेरकी गर्जन से सब भेड़ बकरी व गड़रिया भाग गये वह शेरका बच्चा रहगया तबतो पहाड़ पर से शेरने आकर बच्चेसे पूछा तू कौन है वह बोला मैं बकरा हूं शेर बोला बावले शेर है फिर भी बच्चा अपने अभ्यास पड़जाने के अनुसार अपने को बकराही बताता रहा शेरने कहा अपने पंजे और बकरियों के पंजे मिला और मेरे अपने देख बच्चा बोला मेरा तेरा सब अंग मिलता है तब शेर १ पानी के चश्मे पर लेगया

वहां मुंहका प्रतिबिंब दिखलाया तो बच्चेको निश्चय हुआ कि मैं शेर हूं बचपन से बकरियों के अभ्यास में पड़कर अपने स्वरूप को भूलगया था ॥

दृष्टान्त

इसी प्रकार मनुष्य शरीर रूपी उपाधी में पड़कर अपने स्वरूप को मुकय्यद ख्याल करते हुए अपने आत्म स्वरूप को भूल बंधमान मानते हैं यादि विवेकादिक साधन चतुष्टय होकरके अपने स्वरूप को महा वाक्यों से मिलावें तो शुद्ध बुद्ध नित्य मुक्त अज अविनाशी सुख राशी परम पवित्र जाने जिसको जीव जान रहे हैं

युक्ति २९

जैसे कोई बाज़ीगर अपना खेल दिखाने को मदारी या जमूरे को जैसा संकेत कर देता है वैसा ही जमूरा उसकी मरज़ी के अनुसार करने लगता है ॥

दृष्टान्त

इसी प्रकार पंडित मौलवी पादरी भी परमेश्वर रूप बाज़ीगर के संकेत से हिन्दू मुसलमान ईसाई आदि जमूरे आपस में झगड़ते हैं सो अन जान आदमी तो उसको सुनकर मोहित होते हैं और जानकार ईश्वर बाज़ीगर की लीला देख इस झगड़े को

देख प्रसन्न ही होते हैं जैसे जमूरों के झगड़े को देख हुशियार आदमी प्रसन्न ही होते हैं- यहां तक कि जमूरा सबके प्रसन्न करने को मदारी का कान तक भी पकड़ लेता है और मदारी भी प्रसन्न ही होता है इसी प्रकार ईश्वर को नास्तिक रूपी जमूरे भी नहीं मानेत परन्तु परमेश्वर प्रसन्न ही होता है ॥

युक्ति ३०

एक शहर के किनारे पर १ नदी बहती थी वह चंद रोज़ के बाद ख़ुश्क होगई बालू नदी का जलके सदृश ऊपर मकानों से वदूर से भासता था चंद शख़्सों ने मिल कर विचारा कि नदी के पानी से बर्फ़ बनाने का कारख़ाना खोलें बर्फ़ की बिकरी यहां अच्छी होगी रुपया जमा कर इक़रार नामा तहरीर होगया एक वक्त सब शरीक बैठे हुए कहने लगे कि भाइयों दुकान पर दोस्त आशना सबही आवेंगे ऐसा न करना कि ख़ातिर तवाज़े ही में दुकान का बर्फ़ पिलादो और नुक़सान उठाना पड़े आख़िरकार एक शरीक बोला जैसा मौक़ा होगा बर्ता जायगा क्योंकि कोई ऐसा भला मानस मित्र आगया कि शरबत की ख़ातिर में दो पैसे की बर्फ़ पीगया तो क्या उससे चलते समय पैसे मांगने को मुंह खुलेगा दूसरा शरीक बोला यह नहोगा ग़रज़ बातों ही बातों में उनमें तकरार बढ़ के कहचरी में नालिश की नौबत पहुंची तब हाकिम ने पूछा कि कलके कारख़ाने को पानी कहां से लाते तो जवाब

दिया कि इस नदी में से लाते फिर हाकिम ने पूछा किस नदी में से तौ बोले यह जो शहर के क़रीब बहती है तब हाकिम ने कहा कि यह तुम्हारा भ्रम है नदी सूखी पड़ी है उनका मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया हक़ीक़त में बिदून नदी के बर्फ़ की दूकान के ख़रीदारी की बाबत लड़ना मूर्खता है या नहीं

दृष्टान्त

इसी प्रकार जो मनुष्य संसार के झूंठ सत्य होने पर लड़ते और बहस करते हैं उनसे प्रथम संसार का होना साबित कराया जावै क्योंकि जब स्वप्न वत है तौ स्वप्न में तौ अन हुए पदार्थ बे सामान देखने में आते हैं आंख खुलने पर वे पदार्थ ही नहीं अब कोई उन पदार्थों पर लड़े तौ मूर्खता है या नहीं ग़रज़ जोर बातैं व चीज़ें इस संसार में सुनै व देखै उनमें से हर एक को स्वप्न से मिलाता जावै कि ऐसा ही स्वप्न में होता है या नहीं जो वैसाही होता स्वप्न में मालूम पड़े तौ अवश्य इसको स्वप्न ही के समान मानै

इति

हस्ताक्षर मक्खन लाल शर्म्मा

उप नाम मग्नानन्द

सूची पत्र उन पुस्तकों का जो श्री उक्त स्वामी म. के पुस्तकालय में मौजूद हैं

नाम पुस्तक	आशय	भाषा	कीमत	महसूल
निर्भय सुधा तरंगिणी	ज्ञानवैराग्य	नागरी	।৶	)॥
निर्भय बिलास	ज्ञानवैराग्य	नागरी	।)	)॥
निर्भयानुभवप्रकाशक	ज्ञानवैराग्य	नागरी	।)	)॥
रेल महाकाली	रेलकेमंत्रस्तोत्र	नागरी	=)	)॥
,, उर्दू	,,	उर्दू	=)	)॥
आत्मबोध	वेदान्त	नागरी	=)॥	)॥
शान्ति शतक	ज्ञानवैराग्य	नागरी	-)	)॥
युक्ति प्रभाकर	ज्ञानवैराग्य	नागरी	=)	)॥
मिआरुल मुकाशिफ़ा १००दरख्वास्त आने पर और छपाई जावेंगी	वेदान्त छांदोग्य उपनिषद का बहुतशुद्धतर्जुमा	उर्दू	॥।)	)॥
शिव पूजन	विधि	नागरी	।)	)॥
सन्ध्या वेदोक्त	....	संस्कृत	=)	)॥
लावनी मग्नानन्द	गुरु पिता	नागरी	)॥	)॥
नुक्स इसलाह	रसूमात क्षत्री	उर्दू	=)॥	)॥
वहारिस्तान	क़िस्से	उर्दू	≡)	)॥

विज्ञापन

हे सज्जन सत्संगी भाइयौ यह पुस्तक आत्म जिज्ञासू अधिकारी गुरु भक्त भाइयों को बहुत लाभ दायक समझ के छपाई है अनधिकारी इसको क़िस्सा कहानी समझ के न पढ़ें इसके तात्पर्य्य की ओर दृष्टिदें और छापने में कोई अशुद्धता रह गई हो उसे मेरी बुरी बावली भाषा के दोष सहित क्षमा करें ॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना

बेशमा ज़िला अलीगढ़ में लाला राम स्वरूप नायब पटवारी से हाथरस ज़िला अलीगढ़ में पं० मक्खन लाल रामस्वरूप बुकसेलर फर्रुखाबाद में लाला चिन्तामणि बुकसेलर मेरठ में श्री पंडित बाबू बैजनाथ वकील से पं० काली चरण ठेकेदार बेशमा ज़िला अलीगढ़ से । लाला घासी राम बुकसेलर मेरठ पं० हरदेव सहायजी ज्ञान सागर प्रेस शहर मेरठ जिस पुस्तक पर मुहर या ग्रन्थ कर्ता के दस्तख़त न होंगे वह चोरी की समझी जायगी ॥

मुहर

विज्ञापन

हे सज्जन सत्संगी भाइयौ यह
जिज्ञासू अधिकारी गुरु भक्त
दायक समझ के छपाई है
कहानी समझ के
और छापने
बुरी